## सम्पादकीय

# राजग में बढ़ते बिखराव के संकेत!

बिहार में खिसके कुछ दिनों से जारी राजग के घटक दलों में घमासान और उनके नेताओं की बयानबाजी में बिखराव के संकेत उभर रहे हैं। 2019 लोकसभा चुनाव को लेकर बिहार में सत्तारूढ़ घटक राजग के घटक दलों के बीच नेतृत्व के 'चेहरा' और सीटों को लेकर रस्साकशी चरम पर है। राजग में शामिल सभी दल ज्यादा से ज्यादा सीटों पर अपनी दावेदारी पेश कर रहे हैं। जदयू भले ही राजग में खुद को बड़े भाई के रूप में पेश कर भाजपा पर दबाव बना रहा हो लेकिन 2014 के आम चुनाव के समय भाजपा के साथ रही तत्कालीन लोक समता पार्टी (आरएलएसपी) के नीतीश कुमार को महागठबंधन का नेता मानने से इनकार कर दिया है। आरएलएसपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता अजय यादवजी ने नीतीश कुमार को निशाने पर लगाकर उठाये हुए उन्हें बिहार में महागठबंधन का चेहरा मानने से इनकार कर दिया है। उन्होंने साफ किया है कि बिहार में उनकी पार्टी जदयू से बड़ी पार्टी है क्योंकि उनके पास लोकसभा की तीन सीटें हैं और जदयू के पास महज दो सीटें हैं। उन्होंने नीतीश कुमार को अपने नेता के रूप में स्वीकार नहीं किए जाने संबंधी बयान देकर न केवल उन्हें, बल्कि भाजपा को भी असमंजस में डाल दिया है। महत्वपूर्ण यही नहीं सके, उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार एक बार फिर से यू-टर्न मारने हुए लालू प्रसाद यादव के पास नहाने जा सकते हैं। ऐसे में नीतीश कुमार पर ये भरोसा नहीं कर सकते।

इसी कड़ी में केन्द्रीय मंत्री और आरएलएसपी के प्रमुख उपेन्द्र कुशवाहा ने भाजपीय जनता पार्टी की तरफ से दिल्ली मुख्यमंत्री आवासीय सम्मेलन में शामिल न होकर बिहार की सियासत को अधिक गर्म कर दिया है। हालांकि उन्होंने साफ कर दिया है कि बिहार में राजग एकजुट है और आगे भी रहेगा। इसके साथ ही उन्होंने राजग से अलग होने की उड़ रही अफवाहों का भी पुरजोर खण्डन किया। उल्लेखनीय है कि भाजपा की तरफ से राजग में शामिल घटक दलों के लिए 'जिताऊ रणनीति भोज' का आयोजन किया गया था। इस भोज में मुख्यमंत्री और जदयू अध्यक्ष नीतीश कुमार केन्द्रीय रसायन मंत्री अनंत गीते के प्रमुख सहयोगी दल लोक जनशक्ति पार्टी और भाजपा के कई नेता शामिल हुए लेकिन आरएलएसपी के प्रमुख उपेन्द्र कुशवाहा शामिल नहीं हुए। इसके बाद राजग में फूट की अफवाहों को और बल मिल गया। सोशियोलॉजी है कि राजग की सहयोगी आरएलएसपी के उपेन्द्र कुशवाहा पिछले एक साल में राजग और भाजपा के खिलाफ कई बार नाराजगी जाहिर कर चुके हैं। उन्होंने कई बार यह कहा है कि राजग में सहयोगी दलों की बात नहीं सुनी जाती।

अब उसके 2019 का लोकसभा चुनाव नजदीक आ रहा है तो बिहार में राजग का तेवर चौंक होगा, इसे लेकर खींचतान शुरू गयी है। दरअसल, उपेन्द्र चाहता है कि राजग में नीतीश कुमार को आगे रखकर राजग चुनाव मैदान में उतरे, लेकिन रामविलास पासवान की लोजपा और कुशवाहा की आरएलएसपी ने मोर्चाबाद शुरू कर दिया है। जाहिर है, भाजपा के लिए यह स्थिति चिन्ताजनक है क्योंकि जिसकी सोर्चाबन्दी का मुकाबला करने के लिए जरूरी है कि राजग के सभी घटक दल एकजुट रहें, लेकिन सभी महत्व सवाल यह है कि घटक दलों में संतुलन कैसे बनाया जाए? मैसे लोकसभा चुनाव 2019 में है। इस लिहाज से चुनाव में अभी तकरीबन एक साल का समय बाकी है लेकिन एक तरफ जहाँ सिपाह एकजुट हो रहा है, वहीं बिहार में राजग के घटक दल उसे अंदरूनी चिन्ता दे रहे हैं। इस परिदृश्य में भाजपा की परेशानी बढ़नी लाजमी है। आपने चुनाव में नीतीश कुमार के नेतृत्व के साथ जदयू ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि उसे राज्य की 40 लोकसभा सीटों में से 25 सीटें चाहिए। उनका तर्क है कि बिहार में आपे भी वह बड़ी पार्टी है, इसलिए उसे सबसे अधिक सीटें चाहिए।

# श्रम संस्कृति का शहर मुम्बई

कौन हैं ये लोग? सड़कों पर लाखों की भाव - पार की दुनिया के अलग - थलग सूंड में जहाँ - तहाँ बैठे, कतारों में खड़े अथवा सड़कों पर बिछाये, पुराने पड़ चुके कपड़ों में लिपटे, लेट लंबे खर्राटे में काफी बिंदास, पेड़ों पर सामान या भाव लिए, भूखी - प्यासी, सहमी - डरावी आँखों से इर आसे जाने वालों को कही उम्मीद से तकते हैं। कौन हैं ये?

सड़कों - मोहल्लों से जुड़ी लाखों के पीछड़ों पर रोजाना सुबह एक अजीब सी भीड़ इकट्ठाने ही पुलिसे वालों का ध्यान खींच लेती है। शक्कर के डब्बे पर अथवा से घिर चुकी अल्युम्नि पीढ़ियों की ये भीड़ कुछ ही देर में जाने कहाँ से जुट जाती है और फिर जाने कहाँ गायब हो जाती है? ये लोग कौन हैं जहाँ के खुलने के इंतजार में रोज वहाँ जुटते हैं। ये कौन हैं जो दिसम्बर से जिसे चक्की के इंतजार में घूंटे होते से

**डॉ. जयश्री सिंह**

आपस में पीसे - पीसे चहकते हैं। इनकी महत्वाकांक्षित इमारतों के सिलसिले, दो - चार सौ के लिए उन्हें की चाकी जगाने वाले मेहनतकश, पूरा में पसीना बहाने वाले कामगार, जिन्हें के पेट के पास सिलबट्टर कर रोटी - रोजरा - अचार खाकर संतुष्ट हो जाने वाले वेगड़ अथवा दिहाड़ी मजदूर। इनसे अधिक इनकी कोई पहचान नहीं। । इनके काम को मुम्बई की भाषा में 'रोजमर्रा' कहा जाता है।।

ये रोजाना शहर के सड़कों पर खड़े हो कर अपने श्रम का सौदा जुगाते हैं। ये अपने इलेक्ट्रीफाइड ताकतों में अपने हुनर का औजार लिए उन अनिश्चित मंजिलों का इंतजार करते हैं जिन्हें पार्क के टापकते नल ठीक कराना है, बाकिस ने पहले जिनकी खोदियों और खतें पर प्लास्टिक चढ़ाना है, जिन्हें बनवाना है मकान-दुकान, इन्हें चुकी रवाजार का इलाज कराना है, पर्सोजाते एक पर शहरी लवणास है या फिर दीवार पर लद कोई रंग चढ़ाना है। इन बेरोजगारों को काम और श्रम के बीच सेतु भाव का अपने लिए हर दिन ऐसे ही रोजगार तुलाना है।

सेंसर्स के अभिलिप्त संसद के ये लिखित वासी अपने रेन कोटों से दोस्तों की ऐसी ने कर तो चलते हैं किंतु इस बात से अनजान ही रहते हैं कि ये अपनी अंत की रोटी किस जगह पर खायेंगे। ये उस जगह के होजमा में होते हैं जहाँ इन्हें अपने हिस्से के सुख का श्रम चुकाना है और अपने परिवार के लिए आने वाले कल की रोटी जुटानी है। हमने अक्सर इन्हें कौतूहल से देखा, इनकी अल्युम्नी पीढ़ वाली सिक्की को लाड़, इनके नाक बहते कई बच्चों से पूछा की किंतु उन्होंने जब भी हमें देखा आँखों में चमक भरी एक उम्मीद से देखा।

हमारे घर की हर ईंट पर इनके हाथों के निशान हैं, इन्होंने बाँस की उँहियों पर खड़े हो कर ऊँची इमारतों पर पलस्तर चढ़ाये, इन्हीं ने रंगी शहर घर की दीवारों, फर्शों इनके पाँव के नख और पंजलों। जगभग रोज ही ज्याद के होजमा में होते हैं जहाँ इन्हें अपने श्रम के खरीदार मिलते हैं। ये बिना किसी बीमा पालिसी के जान जोखिम में डाल कर छतों पर चले हैं, ऊँचे टाँवरों की दीवारों पर लगी खड़कियों पर अपने पाँव टिकाये, बिलकुल लगह अपना व्यक्तित्व बनाये रखे रहते हैं, झुलना देने वालों पर को लहते हैं, सुबह से शाम तक लगातार जान हथेली पर रखे जोखिम भरा काम करते हैं। दु:खद है कि इनके गिरने, हाथ - पैर टूटने अथवा मर जाने से हमारे राज्य सरकार को कोई नुकसान नहीं होता। किसी बीमा कंपनी को इनकी सुरक्षा की कोई चिंता नहीं, तिस पर तो इनका का कोई इलाज नहीं, कोई सहायता नहीं, कोई आसरा नहीं, किसी संगठन अथवा संगठन से कोई आश्वासन नहीं। इनकी कोई अधिक सुनियर नहीं, कोई मौल पत्र नहीं, कभी कोई हड़ताल भी नहीं। आजाद भारत में आज भी कितना बड़ा तबका इन 'अनौपचारिक लेबर' का है इसके बाद भी हमारे विकासशील समाज ने इन्हें हमेशा अनदेखा ही किया है।

कुछ सिनिमल से कॉन्ट्रेक्टर जो रोज कहीं न कहीं इनसे मजदूर खोजाते हैं, दैर - रात - मिट्टी दीवाले हैं, लोकल की लड़ने पर भद - धोद करवाते हैं, पानी के पाइपों की मरम्मत करवाते हैं अथवा लाइ - लाइ के नल दीवाते हैं। उनमें से कई बेसिमर पेंड़ काल सिलने के बहाने इनकी तलाशाह से एक लिहाई - पीपाई भाव भी चूस ले जाते हैं। ये हमारे देश के वे लाचार नागरिक हैं जिनसे इनकी किसी सरकार को कोई सरोकार नहीं, किसी सोहर सिस्ट में इनका नाम नहीं, इनके नाम कोई मकान - खेत - खलिहान नहीं। सामान्य से इन मजदूरों के पास सो चालीसों भी नहीं कि ये बात - खात पर जुताई लगाएँ, आराम कहाँ बनवाएँ अथवा मुफ्त में पाठन जुटाएँ। धन ही इनका एकमात्र धर्म है फिर इनमें क्या हिन्दू और क्या मुसलमान?

गरीबी के अलावा तीन से पीड़ित हमारे देश का यह यह वर्ग है जिसके लिए सेहतन ही उनके हर दर्द का एकमात्र इलाज है।

## श्रीरामचरितमानस

प्रथम सोपान

बालकाण्ड

**जे त्रिभुवन परम सुहावनि । जन मनोहारिनि गवत सुहावनि ॥**
**सुचि सुंदर आश्रम मन हरनी । जरा मरन दुख रोग न जरनी ॥**
**अहिमिति जेहिं जग जनउआ । सोउ अवतरिहि मोरि यह माया ॥**

जिन (भरियों) को पढ़े पापशाली मनुष्य अवश्यलित सुनकर, गाकर और मन स्नानकर, सवसाल तर जाते। आहिमिति यह मेरी (स्वरूपभूता) माया भी, जिसने जगत् को उत्पन्न किया है, अपना लेते ॥ 2 ॥

**पुरुब मैं अभिलाष तुम्हारा ।**
**सहज सम्भु मन तव मन हमारा ॥**
**पुनि पुनि अस कहि कृपानिधान ।**
**बैठारान पद भगवान ॥**

इस प्रकार मैं सुरहती अभिलाषा पूरी करूँगा। मेरा इस साथ है, साथ है, साथ है। कृपानिधान भगवान् बार-बार ऐसा कहकर अन्तर्धान हो गये॥3॥ ●

## पंचांग

फोल्गुन, 12 जून, मंगलवार, पहिंय तिथि-22 शके 1939, दिल्ली-1439, संवत्सर-27, संवत्-28, ज्येष्ठ 1425, विक्रमीय संवत 2075, अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष, चतुर्दशी/चतुर्दशी 7/34 से रवि 4.34 तक, चुलिया सवत 19/07, सूर्यवर्ष योग 12/49, भद्रावलम 28/04, मास शिवरात्रि (मा) ●

## आज के राशिफल

**मेष-** रका दुख लाभ आज प्राप्त हो सकता है। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम सालस से संपन्न हो जाएंगे। शुभांक-5-8-9

**वृष-** कुछ एकाग्रता की आवश्यकता होगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। शुभांक-4-6-7

**मिथुन-** जीवनसाथी का सहयोग लाभदायक रहेगा। परिचयजनों के सहयोग से काम सरल आसान रहेगा। शुभांक-3-6-9

**कर्क-** परिवारजन का सहयोग व समन्वय से कार्य सरल आसान रहेगा। संदेह उत्पन्न करने वाले रहेंगे। शुभांक-5-7-8

**सिंह-** मेहमानों का आगमन होगा। सामाजिक कार्यों में लाभ